IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेमचन्द कृति उपन्यास निर्मला में नारी वेदनाः एक समीक्षात्मक अध्ययन

Dr. Afsana Azmi

मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के वस्तुवादी–यथार्थवादी कथाकार–साहित्यकार हैं। प्रेमचन्द की रचनाओं में मानवीय संवेदनायें शाश्वत रूप में प्रकट हुई हैं। एक वस्तुवादी लेखक के नाते प्रेमचन्द ने जो कुछ देखा, जिस रूप में देखा, वही अपनी रचनाओं में चित्रित कर दिया। इनकी रचनाओं में मानवीय संवेदनाओं का व्यापक और उदात्त रूप दृष्टिगोचर होता है।

'निर्मला' प्रेमचन्द के सभी उपन्यास में सबसे छोटा एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में बेमेल विवाह और उसके भयंकर परिणामों को दर्शाया गया है। इसमें नारी–जीवन की करूण वेदना को चित्रित किया गया है। यह एक करूण–रस प्रधन रचना है। प्रेमचन्द ने अपने विभिन्न उपन्यासों और कथाओं में वैवाहिक प(ति के दोषों को प्रकट किया है। विवाह एक ढकोसला बन कर रहा गया है जिसमें रूपयों की थैलियों से सौदे तय किए जाते हैं। लड़के–लड़की के स्वभाव, आकृति–प्रकृति, वय आदि का कोई मिलान जरूरी नहीं है। समाज में दहेज की प्रथा से अनर्थ हो रहा है। इसी के कारण एक पन्द्रह वर्षिय बालिका–निर्मला का विवाह एक 40 वर्ष से भी अध्कि वय के कुरूप– तोन्दू, किन्तु सम्पन्न वकील से, उसकी माँ को मजबूरी–वश कर देना पड़ता है। इस सामाजिक समस्या के कारण, पारिवारिक जीवन की अनेक विषमतायें उत्पन्न हो जाती है। ;कृष्णदेव झारी, 1997द्ध तोताराम के तीन बच्चों की विषमता के रूप में निर्मला को, बच्चों से पूरा स्नेह होने पर भी लाँछित किया जाता है। उसे वृ(ा ननद की कोप दृष्टि और ईर्ष्या का शिकार भी बनना पड़ता है। वृ(पति के संशय और विषय परिस्थितियों से घर तबाह हो जाता है। 'निर्मला' सन् 1923 ई॰ में प्रेमचन्द द्वार रचित की गयी थी जिसमें तत्कालिन सामाजिक परिवेश में नारी की विषम स्थिति तथा वेदना को बखूबी परिलक्षित किया गया है। प्रेमचन्द ने निर्मला के माध्यम से बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा जीवन जैसी कुरीतियों पर प्रहार करके नारी मुक्ति का स्वर ऊँचा किया है ;शरण सहेली, 2012द्ध।

'निर्मला' अनमेल विवाह और उसके भयंकर, सांघातिक दृष्परिणामों की करुण कहानी है। ;अमृत राय, 1985द्ध। इसके परिणामस्वरूप नारी अर्न्त(न्द्व, आत्महनन, आत्मशोषण में जाने के लिए मजबूर हो जाती है। कुण्ठा, संत्रास, घुटन, ऊब और कटुविसंगति में जीवन यापन के लिए विवश हो जाती है। 'निर्मला' उपन्यास में निर्मला, रूक्मिनी, निर्मला की माँ कल्याणी जैसी नारियों की वेदना की दास्तान है।

'निर्मला' उपन्यास में एक नारी ही दूसरी नारी की वेदना का कारण बनती है और उसको जीते जी नरक से भी बदतर जिन्दगी जीने के लिए विवश करती है। कल्याणी निर्मला की शादी के सन्दर्भ में कहती है– ''.....कह तो रही हूँ पक्का इरादा कर ली कि पाँच हजार से अध्कि खर्च न करूँगा घर में तो टका है नहीं, कर्ज ही तो भरोसा ठहरा, तो इतना कर्ज क्यों लें कि जिन्दगी में अदा न हो। आखिर मेरे और बच्चे भी तो हैं, उसके लिए भी तो कुछ चाहिए'' ;निर्मलाः पृ॰–9द्ध। इस प्रकार एक माँ ही अपनी संतान निर्मला का दहेज के पैसों के कारण अनमेल विवाह करके उसे जीते जी नर्क के कुएँ में ढ़केलती नजर आती है। कल्याणी अपने पति उदयभानु की मृत्यु के बाद केवल कुछ रूपयों की बचत हो जाने के उ(श्य से अपनी बेटी निर्मला का विवाह उसके अनुकूल योग्य वर से न करके एक विध्ुर, जो कि निर्मला के पिता के उम्र का था, उससे कर देती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि उस युग में दहेज के सामने लड़की के रूप–गुण की कोई कीमत नहीं थी।

निर्मला का अनमेल विवाह उसके दांपत्य जीवन की असपफलता तथा उनके जीवन में वेदना का कारण था। साथ ही परम्परागत संस्कारों से युक्त निर्मला चाहकर भी उससे बाहर नहीं निकल सकती थी। इसी कारण उसने डॉ॰ सिन्हा के प्रेम प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकी। परंपरागत संस्कारों के कारण उसकी जिन्दगी वेदनायुक्त हो जाती है।

निर्मला के जीवन में वेदना के अनेक कारण हैं। पिता की मृत्यु के बाद वांछित दहेज के अभाव में भालचन्द्र सिन्हा के डॉक्टर पुत्रा भुवनमोहन सिन्हा के साथ वैवाहिक रिश्ता टूटना, पिफर अध्ेड़ विध्ुर मुंशी तोताराम के साथ परिणय सूत्रा में बंधना, सौतेली माँ के रूप में अपयश की भागीदार बनना, सौतेले पुत्रा मंसाराम के प्रति मोहु आदि प्रसंगों के माध्यम से प्रेमचन्द ने नारी–वेदना के विभिन्न आयामों का शब्दचित्रा अपने उपन्यास 'निर्मला' में प्रस्तुत किया है। निर्मला के शब्दों में उपन्यास 'निर्मला' में प्रस्तुत किया है। निर्मला के शब्दों में ''हम लड़कियाँ है, हमारा घर कहीं नहीं होता' ;निर्मलाः पृ॰–5द्ध।

बेमेल वैवाहिक स्थिति के कारण निर्मला को 'वही बातें, जिन्हें किसी युवक के मुँह से सुनकर उसका हृदय प्रेम से उन्मत हो जाता, वकील साहब के मुँह से निकलकर उसके हृदय पर शर समान आघात करती थी.....;निर्मलाः पृ॰–37द्ध। तोताराम की जवाँमर्द बनने की कोशिशों पर उसे क्रोध और घृणा का भाव नहीं होता था। 'क्रोध और घृणा उन पर होती है जो अपने होश में हों....वह बात–बात में उनकी चुटकियाँ लेती, उनका मजाक उड़ाती, जैसे लोग पागलों के साथ किया करते हैं' ;निर्मलाः पृ॰–46द्ध। निर्मला की वेदना का कारण तोताराम के द्वारा परिवार के विघटन के लिए उसे जिम्मेदार ठहराना भी है–'..... आज से छः साल पहले क्या इस घर की यही दशा थी? तमने मेरा बन–बनाया घर बिगाड़ दिया, तुमने मेरे लहलहाते बाग को उजाड़ दिया। केवल एक ढूँढ रह गया है। उसका निशान मिटाकर ही तुम्हें संतोष होगा। मैं अपना सर्वनाश करने के लिए तुम्हें घर नहीं लाया था' ;निर्मलाः पृ॰–163द्ध।

इस उपन्यास में निर्मला की माँ कल्याणी की नारी–वेदना को भी वर्णित किया गया है। अपने पति की कटू बातों से कल्याणी के हृदय में वेदना उत्पन्न होती है और वह कहती है– ''तुमसे दुनिया की कोई भी बात कही जाती है, तो जहर उगलने लगते हो, इसलिए न कि जानते हो, इसे कहीं ठिकाना नहीं है, मेरी ही रोटियों पर पड़ी हुई है, या और कुछ! जहाँ कोई बात कही, बस सिर हो गए, मानो मैं घर की लौंडी हूँ, मेरा केवल

रोटी और कपड़े का नाता है। जितना ही मैं दबती हूँ, तुम और भी दबाते हो' ;निर्मलाः पृ॰–10द्ध। कल्याणी के इन शब्दों में भी नारी–वेदना स्पष्टतः परिलक्षित होती है।

तोताराम की विध्वा बहन रूक्मिणी भी ससुराल में कोई सगा न रहने के कारण स्थायी रूप से तोताराम के घर रहती है। उसका मानना था कि तोताराम की दूसरी शादी निर्मला के साथ होने के उपरांत घर में उसका महत्व कम हो गया था। इस कारण रूक्मिणी निर्मला से चिढ़ती थी। रूक्मिणी हमेशा सिपाही की भाँति निर्मला का पीछा करती रहती थी।

परंतु इस उपन्यास के नारी पात्राों में सबसे वेदनापूर्ण स्थिति निर्मला की है। सुन्दर, सुशील, कमसीन, कनक छरी सी कामिनी पन्द्रह वर्ष की निर्मला का विवाह परिस्थितिवश तथा दहेज–प्रथा के कारण चालीस वर्ष के मोटे, भद्दे पिता–तुल्य तोताराम से हो जाती है। इस विषमता के कारण निर्मला को तोताराम के पास बैठने, हँसने, बोलने में संकोच करती थी और उनके पास झुककर, नजर बचाकर निकलती थी। निर्मला अपने पति को प्रेम की नहीं सम्मान का पात्रा समझती थी। इस बीच निर्मला तोताराम के बड़े पुत्रा हमउम्र मंसाराम से अंग्रेजी पढ़ने लगी तो तोताराम को मंसाराम और निर्मला के बीच अवैध सम्बन्ध का सन्देह हुआ। पिता के इस सन्देह के कारण मनसाराम ने प्राण त्याग दिए जिसका दोषारोपण निर्मला पर किया गया। जबकि तथ्य यह था कि निर्मला मनसाराम के बच्चों के साथ हँस–खेलकर अपनी दशा थोड़ी देर के लिए भूल जाती थी।

सर्वप्रथम 'निर्मला' उपन्यास में नारी की वेदना अनमेल विवाह के परिणामस्वरूप उपन्न होता है। जिस अध्ड़ पति के देह का स्पर्श उसे सर्प के स्पर्श के समान लगता है, उससे आलिंगित होकर उसे जितनी घृणा, जितनी मर्म वेदना होती है, उसे निर्मला ही जान सकती थी, कोई और नहीं। निर्मला के चरित्रा में एक नारी की अशक्तता दिखाई पड़ती है। यह निर्मला के वाक्यों से स्पष्ट होता है– ''संसार में सब के सब प्राणी सुख सेज परी हो तो नहीं सोते? मैं भी उन्हीं अभागों में हूँ। मुझे भी विधता ने ही दुख की गठरी ढोने के लिए चुना है। वह बोझ सिर से उतर नहीं सकता। उसे पफेंकना भी चाहूँ तो नहीं पफेंक सकती'' ;निर्मलाः पृ॰–51द्ध। तोताराम की विध्वा बहन रूक्मिनी से जब बच्चे मिठाई के लिए उससे पैसे माँगते तो वह कहती है– अपनी विमाता से जाकर कहो। निर्मला बच्चों को पैसे देती तो क्रोध से कहती– ''माँ के बिना कौन समझाए कि बेटा बहुत मिठाइयाँ मत खोओ'' ;निर्मलाः पृ॰–42द्ध। बच्चों को मिठाइयाँ न देने पर कहती– ''बिना माँ के बच्चे को कौन पूछे? रूपयों की मिठाइयाँ खा जाते अब ध्ले–ध्ले को तरसते हैं'' ;निर्मलाः पृ॰–42द्ध। रूक्मिनी निर्मला को ताने देती हुई कहती– ''जानती तो थी कि यहाँ बच्चों का पालन पोषण करना पड़ेगा, तो घरवालों से नहीं कह दिया कि वहाँ मेरा विवाह न करो'' ;निर्मलाः पृ॰–62द्ध।

निर्मला की मुँहपफट माँ कहती है– ''अगर लड़की के भाग्य में सुख भोगना बदा है, तो जहाँ जाएगी, सुखी रहेगी। दुख भोगना है तो जहाँ जाएगी दुख झेलेगी। हमारी निर्मला को बच्चों से प्रेम है। उनके बच्चों को भी अपना समझेगी'' ;निर्मलाः पृ॰–58द्ध। निर्मला की बेमेल विवाह के नर्क में झोंकने वाला और कोई नहीं बल्कि उसकी स्वयं की माँ कल्याणी ही थी।

प्रेमचन्द कृत 'निर्मला' उपन्यास में नारी–वेदना का मार्मिक चित्राण है। इस उपन्यास में सारी पीड़ित नारियाँ अपने अस्तित्व रक्षा के लिए संघर्षरत दिखाई पड़ती है। 'निर्मला' के माध्यम से प्रेमचन्द ने विध्वा जीवन की वेदना को भी प्रकट किया है। उन्होंने दर्शाया है कि नारी जीवन के लिए जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही जीवन में उपेक्षित भी।

प्रेमचन्द की सर्वोच्च प्राथमिकता जीवन ही नहीं साहित्य की मुख्य धारा में नारी को प्रतिष्ठित करना था। 'निर्मला' उपन्यास का नामकरण नायिका के नाम पर होना उनकी इसी दृष्टि का परिचायक है। नारी–केन्द्रित साहित्य के इतिहास में इस उपन्यास का विशिष्ट स्थान है। निर्मला के माध्यम से इस उपन्यास में नारी वेदना के विभिन्न आयामों का चित्राण हुआ है।

'निर्मला' उपन्यास में प्रेमचन्द ने इस उपन्यास की नायिका निर्मला की नारी वेदना को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। दहेज की कुरीति के समक्ष 'निर्मला उपन्यास ने दर्पण रखकर उसके कुत्सित रूप एवं दुष्परिणामों को विशाल रूप में दिखाकर हमारी आँखें खोली हैं निर्मला नारी–वेदना का एक करूणतम अध्याय है ;पूनम काजल, 2017द्ध। प्रेमचन्द ने 'निर्मला' उपन्यास के माध्यम से अनमेल विवाह से सम्बन्धित नारी वेदना को उजागर किया है। इसका मूल कारण पति की शंकालु दृष्टि तथा ननद की उपेक्षा है। निर्मला का जीवन इन सारी विवशताओं से युक्त है। ;शंभु लाल मीणा, 2023द्ध। निर्मला के चरित्रा में एक नारी की अशक्तता की झलक मिलती है। पति द्वारा निर्मला पर पुत्रा मनसाराम के साथ लगाए आक्षेप को वह जिस दिन समझ पाई उस दिन उसे असहय वेदना हुई थी। उसे जीवन–भर ठोकरें खाने के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। उपन्यास के अंत में प्रेमचन्द ने निर्मला की मृत्यु को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है– 'उस समय पशु पक्षी अपने–अपने बसेरे की ओर लौट रहे थे, निर्मला का प्राण पक्षी भी दिनभर शिकारियों के निशानों, शिकारी चिड़ियों के पंजों और वायु के प्रचंड झोकों से आहत और व्यथित अपने बसेरे की ओर उड़ गया' ;निर्मलाः पृ॰–159द्ध।

उपसंहारः

'निर्मला' एक अनमेल विवाह से उत्पन्न विसंगतियों की कहानी है। जवान लड़की की शादी एक बुढ़े आदमी से इसलिए कर दी जाती है, क्योंकि जवान लड़का बाजार में बहुत महँगा मिलता है और बाप के गाँठ में उतना पैसा नहीं है! क्या आज भी ऐसे शादियाँ नहीं होती? दहेज की समस्या ने आज और भी विकराल रूप धरण कर लिया है और विभिन्न प्रकार के अनैतिक अनाचारों को बढ़ावा दे रहा है, जो खासकर नारी के लिए वेदना दायक है।

'निर्मला' में भाव–सघनता खूब पायी जाती है। कथा–संघटन की दृष्टि से भी यह रचना उत्तम है। कुछ अस्वभाविक संयोगों और अमनोवैज्ञानिक स्थितियों का दोष इस रचना में पाया जाता है। सामाजिक परिवेश भी सीमित है। पर सीमित पारिवारिक–सामाजिक परिवेश में भी प्रेमचन्द ने नारी वेदना की गहराई को भरने का सपफल प्रयास इस रचना में किया है। यही इस रचना की विशेषता है।

संदर्भ सूचीः

;1द्ध मदन गोपाल ;1965द्ध, *कलम का मजदूर प्रेमचन्द,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

;2द्ध उषा)षि ;1974द्ध, *प्रेमचन्द और उनके उपन्यास,* पृथ्वी राज पब्लिशर्स, नई दिल्ली।

;3द्ध सत्येन्द्र ;1976द्ध, *प्रेमचन्द,* राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

;4द्ध अमृत राय ;1985द्ध, *प्रेमचन्द की प्रासंगिकता,* हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।

;5द्ध नरेन्द्र कोहली ;1991द्ध, *प्रेमचन्द,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

;6द्ध राम विलास शर्मा ;1993द्ध, *प्रेमचन्द और उनका युग,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

;7द्ध कृष्ण देव झारी ;1997द्ध, *प्रेमचन्द की उपन्यास कला का उत्कर्ष,* नालंदा प्रकाशन, नई दिल्ली।

;8द्ध उमाकान्त मिश्र ;2005द्ध, *कथा सम्राट प्रेमचन्द,* प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्राालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

;9द्ध सहेली शरण ;2012द्ध, प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी–अस्मिता की तलाशः ''गबन'' और 'निर्मला' के संदर्भ में, *एक्सपलोरः जर्नल पफॉर रिसर्च पफॉर यू जी एंड पी जी स्टूडेंट्स,* भो॰–4, पृ॰–41–47 ।

;10द्ध प्रेमचंद, *निर्मला* ;2016द्ध संस्करण, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।

;11द्ध पूनम काजल ;2017द्ध, निर्मला उपन्यास की नायिकाः एक विशलेषण, *रीमार्किंग एन एनालाइजेशन जर्नल,* भो॰–1, अंक–12, पृ॰–73–75.

;12द्ध शंभु लाल मीणा ;2023द्ध, अनमेल विवाह का जीवंत दास्तान–निर्मला, *इनोभेसन– द रिसर्च कन्सेप्टः एन ओपेन एसेस जर्नल,* भो॰–7, अंक–12 ।